INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

कक्षा - दसवीं विषय - हिंदी (पाठ्यक्रम-ब)

कार्य-पत्रिका - अपठित बोध (2020-2021)

नाम: _____अनुभाग: _____ अनुक्रमांक: _____दिनांक: _____

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

शब्दकोश में 'फ़ैशन' का अर्थ है - ढंग या शैली। व्यवहार में उससे अभिप्रेत है - परिधान शैली अर्थात् वस्त्र पहनने की कला। इस नाते फ़ैशन कौन नहीं करता! गोरा या काला, मोटा या दुबला प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से वस्त्र पहनता है। अपने अंगों के डील-डौल के अनुसार उन्हें सिलवाकर प्रयोग में लाता है, अतः वह फ़ैशन करता है। यहाँ तक फ़ैशन के विषय में कोई विशेष विवाद नहीं। विद्यार्थी हो या अध्यापक, लड़की हो या लड़का, सभी को ऐसा फ़ैशन करने का जन्मसिद्ध अधिकार है, किंतु फ़ैशन का यह शाब्दिक अर्थ है।

फ़ैशन पर विवाद तब उठ खड़ा होता है, जब हम उसका रूढ़ अर्थ लेते हैं - बनाव-सिंगार। बनाव-सिंगार से दूल्हा-दुल्हन का तो संबंध हो सकता है, किंतु छात्र और छात्राओं का नहीं; क्योंकि अभी वे 'विद्यार्थी' हैं, इस शब्द का अर्थ है - विद्या के चाहने वाले। यदि विद्या के चाहने वाले फ़ैशन को चाहने लगें, तो क्या वे अपने उद्देश्य से दूर न हट जाएँगे? वही बात होगी, 'आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास।' जब विद्यार्थी फ़ैशन में सीमा का अतिक्रमण कर जाएगा, तो विद्या उससे रूठ जाएगी।

कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने 'नकल का निकम्मापन' नामक अपने लेख में लिखा है, 'नकल करके वस्त्रों के आयोजन और यत्न में लगे रहने से बढ़कर मूर्खतापूर्ण कार्य मुझे दिखाई नहीं देता।'

वस्तुतः विद्यार्थियों के इतिहास में कृत्रिम दिखावे की सनक कभी भी इतनी प्रबल नहीं थी, जितनी आज के युग में दिखाई देती है। अधिकतर छात्र गली-मोहल्ले में जिस प्रकार के वस्त्र देखते हैं, वैसे ही वस्त्रों की माँग अपने माता-पिता से करते हैं। ऐसा क्यों? इसलिए कि वे अपने वस्त्रों और रहन-सहन से स्वयं को इतना धनी दिखाना चाहते हैं, जितना वे वास्तव में नहीं हैं। इतना सुंदर बनना चाहते हैं, जितना वे न कभी थे, न हैं और न ही भविष्य में कभी होंगे। दूसरों की आँखों को प्रसन्न करने के लिए इतना बड़ा आयोजन करके वे केश और वेश के फेर में अपना इतना समय व्यर्थ कर देते हैं कि अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए उनके पास न तो समय ही रह जाता है, न रुचि, न धन और न सामर्थ्य ही। भला उन्हें कौन बुद्धिमान कहेगा! यह समय का अपव्यय है, धन की फ़ज़ूलख़र्ची है।

(क) अनुच्छेद में फ़ैशन को किस प्रकार परिभाषित किया गया है?

उत्तर: अनुच्छेद में फ़ैशन को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि 'फ़ैशन' का सामान्य अर्थ है - ढंग या शैली। व्यवहार में उससे अभिप्राय है - परिधान शैली अर्थात् वस्त्र(कपड़े) पहनने की कला। इस नाते फ़ैशन कौन नहीं करता! गोरा या काला, मोटा या दुबला प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से वस्त्र पहनता है। अपने अंगों के डील-डौल के अनुसार उन्हें सिलवाकर प्रयोग में लाता है, अतः वह फ़ैशन करता है।

(ख) फ़ैशन पर विवाद कब खड़ा होता है? इससे छात्र-छात्राओं का संबंध क्यों नहीं हो सकता?

उत्तर: फ़ैशन पर विवाद तब उठ खड़ा होता है, जब हम उसका पारंपरिक अर्थ लेते हैं - बनाव-सिंगार। बनाव-सिंगार से दूल्हा-दुल्हन का तो संबंध हो सकता है, किंतु छात्र और छात्राओं का नहीं; क्योंकि अभी वे 'विद्यार्थी' हैं, इस शब्द का अर्थ है - विद्या के चाहने वाले। यदि विद्या के चाहने वाले फ़ैशन को चाहने लगें, तो क्या वे अपने उद्देश्य से दूर न हट जाएँगे? विद्या उनसे रूठ जाएगी। वे विद्या प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

(ग) अधिकतर विद्यार्थी अपने माता-पिता से क्या माँग करते हैं और क्यों?

उत्तर: अधिकतर विद्यार्थी गली-मोहल्ले में जिस प्रकार के वस्त्र देखते हैं, वैसे ही वस्त्रों की माँग अपने माता-पिता से करते हैं क्योंकि वे अपने वस्त्रों और रहन-सहन से स्वयं को इतना धनी दिखाना चाहते हैं, जितना वे वास्तव में नहीं हैं। इतना सुंदर बनना चाहते हैं, जितना वे न कभी थे, न हैं और न ही भविष्य में कभी होंगे।

(घ) समय का अपव्यय और धन की फ़ज़ूलख़र्ची किसे कहा गया है?

उत्तर: दूसरों की आँखों को प्रसन्न करने के लिए अधिकतर विद्यार्थी केश और वेश के फेर में अपना इतना समय व्यर्थ कर देते हैं कि अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए उनके पास न तो समय ही रह जाता है, न रुचि, न धन और न सामर्थ्य ही। उन्हें बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता। इसे ही समय का अपव्यय और धन की फ़ज़ूलख़र्ची कहा गया है।

(ङ) कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने अपने लेख 'नकल का निकम्मापन' में क्या लिखा है?

उत्तर: कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने 'नकल का निकम्मापन' नामक अपने लेख में लिखा है, 'नकल करके वस्त्रों के आयोजन और यत्न में लगे रहने से बढ़कर मूर्खतापूर्ण कार्य मुझे दिखाई नहीं देता।'

(च) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर: उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक हो सकता है – "विद्यार्थी और फ़ैशन।"

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

यह कहना ग़लत नहीं कि मॉरीशस में हिंदी के जितने पक्षधर हैं, उतने भारत को छोड़कर शायद ही किसी और देश में हों। जब यह द्वीप फ्रांस के अधिकार में था, तभी से हिंदी भाषी भारतीय यहाँ आने लगे थे। ब्रिटेन के अधिकार में चले जाने के बाद उन्नीसवीं सदी के आरंभ में, हिंदी भाषी भारतीय यहाँ कैसे पहुँचे थे, यह त्रासद-कथा अब इतिहास की वस्तु बन चुकी है।

वे सभी शर्तबंद श्रमजीवी थे। प्रायः अनपढ़ परंतु कुछ ऐसे भी थे, जिन्हें साक्षर कहा जा सकता है। उन्होंने ही रामायण की हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार की थीं, जो आज भी उपलब्ध हैं। आज का स्वतंत्र मॉरीशस इस बात का प्रमाण है कि उन श्रमजीवियों ने अपना पसीना बहाकर उस द्वीप को न केवल नंदनकानन बनाया, बल्कि अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखकर, उसकी मानसिक चेतना को भी समृद्ध किया। यातना-शिविरों के उस युग में जब भी उन्हें अवकाश मिलता, वे चुपके-चुपके खेतों के बीच में, बैठिकाओं में, आल्हा के छंद पढ़ते-पढ़ते, मानस की चौपाइयाँ गाते-गाते आनंद विभोर हो उठते। विभोर होने का यह भाव ही उन्हें ज़िंदा रख सका और उनकी भाषा को 'रामचरितमानस' की सुवास और आल्हा के ओज से पुष्ट कर सका।

इन बैठिकाओं की एक और विशेषता थी। छंदों और चौपाइयों का गान करते हुए, वे उनका अर्थ भोजपुरी में करते रहते थे। इसलिए उनकी यह मान्यता सही है कि वहाँ की हिंदी की जननी भोजपुरी है। 'आप कहाँ जाते हैं' के लिए वे कहेंगे, 'आप कहाँ जात हवा' वैसे भी भाषा मात्र संप्रेषण ही नहीं करती, वह बोलने वाले के चरित्र को भी उजागर करती है। मॉरीशसवासियों के लिए हिंदी इसलिए और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि वह उनकी संस्कृति की भाषा है। वह उस द्वीप की न तो राजभाषा है और न बाज़ार की भाषा है। वहाँ हिंदी का पोषण संस्कृति के नाम पर हुआ है। कथाकार रामदेव धुरंधर के शब्दों में, "मॉरीशस ने इतिहास को हिंदी में जीया है। हिंदी में ही स्वतंत्रता तक की यात्रा तय की है। स्वतंत्रता के बाद अस्मिता की खोज में, यहाँ के हिंदी भाषियों और राजनयिकों ने हिंदी का ही सहारा लिया है। इस लंबी दौड़ में हिंदी को कहीं नकारा नहीं गया है और यह हिंदी के लिए बहुत बड़ी विजय है।"

(क) मॉरीशस में हिंदी के पक्षधर किस संख्या में हैं और क्यों?

उत्तर: मॉरीशस में हिंदी के पक्षधर बहुत अधिक संख्या में हैं क्योंकि फ्रांस के अधिकार में इस द्वीप के आने पर हिंदी भाषी भारतीय यहाँ आने लगे थे।

(ख) आज का स्वतंत्र मॉरीशस किस बात का प्रमाण है?

उत्तर: आज का स्वतंत्र मॉरीशस इस बात का प्रमाण है कि सभी शर्तबंद हिंदी भाषी भारतीय श्रमजीवियों ने अपना पसीना बहाकर उस द्वीप को न केवल नंदनकानन बनाया, बल्कि अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखकर, उसकी मानसिक चेतना को भी समृद्ध किया।

(ग) मॉरीशसवासियों के लिए हिंदी क्यों अधिक महत्त्वपूर्ण है?

उत्तर: मॉरीशसवासियों के लिए हिंदी इसलिए अधिक महत्त्वपूर्ण है कि वह उनकी संस्कृति की भाषा है। वह उस द्वीप की न तो राजभाषा है और न बाज़ार की भाषा है। वहाँ हिंदी का पोषण संस्कृति के नाम पर हुआ है।

(घ) मॉरीशस में हिंदी के बारे में कथाकार रामदेव धुरंधर ने अपने क्या विचार व्यक्त किए हैं?

उत्तर: मॉरीशस में हिंदी के बारे में कथाकार रामदेव धुरंधर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है, "मॉरीशस ने इतिहास को हिंदी में जीया है। हिंदी में ही स्वतंत्रता तक की यात्रा तय की है। स्वतंत्रता के बाद अस्मिता की खोज में, यहाँ के हिंदी भाषियों और राजनयिकों ने हिंदी का ही सहारा लिया है। इस लंबी दौड़ में हिंदी को कहीं नकारा नहीं गया है और यह हिंदी के लिए बहुत बड़ी विजय है।"

(ङ) भाषा विचारों के संप्रेषण के अतिरिक्त और क्या करती है?

उत्तर: भाषा विचारों के संप्रेषण के अतिरिक्त बोलने वाले के चरित्र को भी उजागर करती है।

(च) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर: उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक हो सकता है – "मॉरीशस में हिंदी।"